गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का निर्माण : एक अध्ययन

सुरेन्द सिंह

भारतीय स्थापत्य कला में मन्दिर निर्माण शैली का विशेष महत्व रहा है। मन्दिर निर्माण वास्तु शैली का सम्बंध प्राचीन काल से विभिन्न सम्प्रदायों के अतिरिक्त भारतीय मूल जैन एवं बौद्ध धर्मो के साथ भी है। हिन्दु मंदिरों के साथ–साथ जैन एवं बौद्ध मंदिरों का प्राचीन भारत में निर्माण इसी अनुमान को बल प्रदान करता है कि मूर्ति पूजा की भावना से ही मन्दिर का विकास हुआ न कि किसी सम्प्रदाय विशेष से गुप्तकाल को भारतीय वास्तुकला का स्वर्णयुग कहा जाता है। कुछ इतिहासकारों ने इस युग को क्लासिकल युग भी कहा है। इस युग में साहित्य और कला का विकास हुआ। गुप्त काल से पूर्व मन्दिर वास्तुकला के अवशेष नहीं मिलते है मन्दिर निर्माण का प्रारम्भ इस युग की महत्वपूर्ण देन है। गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का विकास ही नही हुआ, बल्कि इसके शास्त्रीय नियम भी निर्धारित हुए। क्योंकि मन्दिर निर्माण के उद्‌भव का सम्बन्ध व्यक्तिगत देवता की अवधारणा से है। इस प्रकार भारत में देवपूजा की परम्परा बहुत प्राचीन रही है। अभिलेखों से प्राप्त होने वाले मन्दिर निर्माण के संदर्भो से यह ज्ञात होता है कि तृतीय शताब्दी ईसवी तक बहुत कम हिन्दु देवालयों का निर्माण हुआ था। लेकिन गुप्तकाल में मंदिर निर्माण बड़ी तीव्र गति से हुआ। गुप्तकालीन युग वैदिक धर्म और ब्राह्मण संस्कृति के पुनरूत्थान का काल था। बौद्ध धर्म के साथ विशेष रूप से स्पर्द्धापूर्वक प्रगति होने लगी थी। बौद्ध स्तूपों, विहार और चैत्यगृहों के साथ–साथ गुप्तकाल में मन्दिरों का विकास भी होने लगा था। समुद्रगुपत के समय के एरण अभिलेख पाषाणमय किसी मंदिर अथवा अन्य धार्मिक वस्तु के स्थापित होने का उल्लेख करता है।